॥ श्रीः ॥

हायनफलरत्नम् ।

जयपुरनिवासिना-
हिन्दीहितैषि-राजमान्य-चौमूंनरेशाश्रित-
हनूमानशर्मणा संगृहीतम् ।

संग्रहकर्त्तृकृत-
भाषाटीकासहितम् ।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक-" लक्ष्मीवेङ्क र " स्टीम्-प्रेस,
कल्याण

॥ श्रीः ॥

अथ हायनफलरत्नम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

अथ रविभावफलम् ।

बहुचिन्ता तथोद्वेगः शिरोक्षिमुखपीडनम् ।
बहुरोगोऽङ्गनापीडा वर्षादौ लग्नगे रवौ ॥ १ ॥

वर्षमें लग्नमें सूर्य हो तो बहुत चिन्ता, उद्वेग तथा शिर, नेत्र और मुखमें पीड़ा करता है। बहुत रोग और स्त्रीको पीडा देता है ॥ १ ॥

रिपुराजानलैश्चौरैर्विवादो विभवव्ययः ।
कुटुम्बकलहो वर्षे द्वितीयो भास्करो यदि ॥ २ ॥

यदि वर्षमें दूसरे सूर्य हो तो शत्रु, राजा, अग्नि और चोरोंसे विवाद और सम्पत्तिका व्यय (खर्च) करता है और कुटुम्बसे क्लेश करता है ॥ २ ॥

राजमानं तथाऽऽरोग्यं धनलाभो रिपुक्षयः ।
सर्वोपक्रमसिद्धिश्च तृतीयेऽब्दे दिनाधिपे ॥ ३ ॥

वर्षमें तीसरे सूर्य हो तो राजासे मान मिले तथा आरोग्य वृद्धि हो, धनका लाभ एवं शत्रुओंका नाश हो और सब उपक्रमोंकी सिद्धि हो ॥ ३ ॥

इष्टस्वजनविद्वेषो भयं भूपालसम्भवम् ।
चतुष्पदमनुष्याणां भयं सूर्ये चतुर्थगे ॥ ४ ॥

चौथे सूर्य हो तो मित्रजनोंसे वैर, राजासे भयकी संभावना और चौपायों तथा मनुष्योंसे भय होता है ॥ ४ ॥

पुत्ररुक् कामिनीकष्टं विघातश्चातिमूढता ।
द्रव्यनाशः स्वेष्टदुःखं वर्षे पञ्चमगे रवौ ॥ ५ ॥

वर्षमें पांचवें सूर्य हो तो पुत्रके रोग, स्त्रीको कष्ट, विशेष घात, अत्यंत मूर्खता, द्रव्यका नाश और अपने मनमिले मनुष्योंका दुःख होता है ॥ ५ ॥

अन्नागमस्तथा धैर्यं राजमानं रिपुक्षयः ।
सौख्यं पुत्रकलत्रादेः षष्ठे प्रद्योतनो यदि ॥ ६ ॥

यदि छठे सूर्य हो तो अन्नका आगमन, धैर्य तथा राजमानकी प्राप्ति, शत्रुओंका क्षय और पुत्र-स्त्री आदिकोंका सुख होता है ॥ ६ ॥

वस्तिवक्षःशिरोरोगैः स्त्रीपीडां नगराटनम् ।
वर्षगस्तु यदा द्यूने भास्करः कुरुते नृणाम् ॥ ७

वर्षमें जब सातवें सूर्य हो तो बस्ति, वक्ष और शिरके रोगोंसे स्त्रीको पीड़ा देता है और नगरमें भ्रमण कराता है ॥७॥

चक्षूरुग् धनहानिः स्याद्बहुपीडा कलेवरे ।
पित्तजा विषभूपालव्यालपीडाऽष्टमे रवौ ॥ ८ ॥

आठवें सूर्य हो तो नेत्रोंमें रोग, धनकी हानि, शरीरमें बहुत पीड़ा और पित्तज, विषज, राजकृत तथा सर्पकृत पीड़ा होती है ॥ ८ ॥

जायापुत्रविवादश्च मतिर्धर्मक्रियादिषु ।
चित्तोद्वेगाकुलो नित्यं नवमे तपनो यदि ॥ ९ ॥

यदि नौवें सूर्य हो तो स्त्री-पुत्रसे विवाद, धर्मक्रियादिमें मति और चित्तके उद्वेगसे नित्य आकुल रहता है ॥ ९ ॥

राजमुद्रादिजं सौख्यं सिद्धारम्भः सुखं धनम् ।
प्रख्यातं वंशविस्तारं वर्षे दशमगे रवौ ॥ १० ॥

वर्षमें दशवें सूर्य हो तो राजमुद्रादिसे सुख होता है, आरंभ किये हुए कार्य सिद्ध होते हैं, सुखविस्तार होता है ॥ १० ॥

वृषवाज्यादिद्रव्याप्तिः प्रमोदस्स्वेष्टवर्गतः ।
नृपप्रसाद आरोग्यं वर्षे लाभगते रवौ ॥ ११ ॥

वर्षमें ग्यारहवें सूर्य हो तो बैल, घोडे, आदिसे धनकी

प्राप्ति, इष्टवर्गसे आनन्दकी प्राप्ति, राजासे प्रसाद (कृपा) की प्राप्ति और आरोग्यकी प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

दृष्टिरुग् द्रव्यनाशश्च विद्वेषो बन्धुवर्गतः ।
देहे पित्तोद्भवा पीडा वर्षे सूर्ये व्ययस्थिते ॥१२॥

वर्षमें बारहवें सूर्य हो तो दृष्टिमें रोग, द्रव्यका नाश, भाइयोंसे वैर और शरीरमें पित्तसे उत्पन्नहुई पीड़ा होती है॥ १२॥इति।

अथ चन्द्रभावफलम् ।

लग्ने शीतकरे पुंसां श्वासकासादिपीडनम् ।
वदनाक्षिविकारैश्च पीडितः कफरोगतः ॥ १ ॥

जिस पुरुषके लग्नमें चन्द्रमा हो तो श्वास कासादिसे पीडा, मुख और नेत्रोंमें विकार तथा कफरोगसे पीड़ा होती है ॥ १ ॥

इष्टस्थानगतं सौख्यं धनाप्तिः श्वेतवस्तुतः ।
शरीरस्य समारोग्यं द्वितीये रजनीकरे ॥ २ ॥

दूसरे चन्द्रमा हो तो इष्टस्थानगत सौख्य होता है, सफेद वस्तुसे धनकी प्राप्ति होती है और शरीर अच्छे प्रकार आरोग्य रहता है ॥ २ ॥

सुखं लाभो भयं पुंसां धनागमस्त्वनुक्रमात् ।
धर्मे बुद्धिर्भवेत्पुंसां तृतीयस्थे हिमद्युतौ ॥ ३ ॥

तीसरे चन्द्रमा हो तो पुरुषको सुख, लाभ, भय, धनका आगमन और धर्ममें बुद्धि यह अनुक्रमसे होते हैं ॥ ३ ॥

सुहृद्बन्धुकलत्रादिसौख्यं चैव धनागमः ।
गोमहिषादिलाभश्च चतुर्थे यदि चन्द्रमाः ॥ ४ ॥

चौथे यदि चन्द्रमा हो तो भाई, बन्धु, स्त्री आदिसे सौख्य, धनका आगम और गाय, भैंस आदिसे लाभ होता है ॥ ४ ॥

स्त्रीसुखं विजयो मानं राजपूजा धनागमम् ।
सद्बुद्धिः सन्ततेः सौख्यं यदा पुत्रोपगः शशी॥५॥

जब पांचवें चन्द्रमा हो तो स्त्रीसुख, विजय, मान, राज० प्रतिष्ठा, धनलाभ, श्रेष्ठबुद्धि और सन्तानसुख होता है ॥ ५ ॥

वातश्लेष्मादिजा बाधा विद्वेषो बान्धवैस्सह ।
नृपचौरोद्भवा पीडा वर्षे षष्ठस्थिते विधौ ॥ ६ ॥

वर्षमें छठे चन्द्रमा बैठा हो तो वात--कफ ज्वरादिसे पीड़ा, भाइयोंके साथ वैर और राजा तथा चोरोंसे उठी हुई पीड़ा होती है ॥ ६ ॥

स्त्रीसुखं नृपतेर्मानं लाभो ग्रामान्तराद्भवेत् ।
वाणिज्याज्जलमार्गाच्च सप्तमे यदि चन्द्रमाः ॥ ७ ॥

सातवें यदि चद्रन्मा हो तो स्त्रीका सुख, राजासे प्रतिष्ठा और ग्रामान्तरसे लाभ होता है तथा वाणिज्यसे एवं जल-मार्गसे लाभ होता है ॥ ७ ॥

अष्टमस्थेऽल्पसन्तोषो द्रव्यनाश उपद्रवः ।
श्लेष्मचक्षुर्विकारश्च वर्षादौ च निशाकरे ॥ ८ ॥

वर्ष आदिमें आठवें चन्द्रमा हो तो थोड़ा सन्तोष, धनका नाश, उपद्रव और कफज नेत्रविकार होता है ॥ ८ ॥

नवमे धर्मलब्धिश्च मनस्सन्तोष एव च ।
यशोवृद्धिर्नृपान्मानं वर्षादौ च निशाकरे ॥ ९ ॥

वर्ष आदिमें नववें चन्द्रमा हो तो धर्मका लाभ, चित्तपर संतोष, यशकी वृद्धि और राजासे सन्मानकी वृद्धि प्राप्त होती है ॥ ९ ॥

द्रव्यागमो वस्त्रलाभरोगनाशौ तथैव च ।
प्रतिष्ठाकीर्तिलाभश्च वर्षे दशमगे विधौ ॥ १० ॥

वर्षमें दशवें चंद्रमा हो तो द्रव्यका आगमन, वस्त्रोंका लाभ, रोगका नाश तथा प्रतिष्ठा और कीर्तिका लाभ होता है ॥ १० ॥

पुत्रवस्त्रादिकप्राप्तिर्धनस्स्वालयसम्भवः ।
श्वेतात्कृपाणकाल्लाभो वर्षे लाभस्थिते विधौ ॥ ११ ॥

वर्षमें ग्यारहवें चंद्रमा हो तो पुत्र और वस्त्राभूषणादिकी प्राप्ति होती है, अपने मकानमें धनका संभव होता है और श्वेत कृपाण (तैयार तलवार) से लाभ होता है ॥ ११ ॥

द्रव्यक्षयः क्षुधाल्पत्वं नेत्ररुक् कलहो गृहे ।
वर्षकाले व्ययस्थाने चन्द्रः कुर्यादिदं फलम् ॥ १२ ॥

वर्षकुण्डलीमें बारहवें घरमें चन्द्रमा हो तो यह फल करता है कि–द्रव्यका नाश, कम भूख, नेत्रोंमें रोग और घरमें क्लेश होता है ॥ १२ ॥ इति । (२४)

अथ भौमभावफलम् ।

मूर्द्धवक्त्रादिरोगांश्च कलहं च धनक्षयम् ।
रक्तपित्तप्रकोपं च कुरुते लग्नगः कुजः ॥ १ ॥

लग्नमें मंगल हो तो माथे और मुख आदिमें रोग करता है कलह करता है, धनका नाश करता है और रक्तपित्तका प्रकोप करता है ॥ १ ॥

वह्निचौरनृपादिभ्यो भयं वा विभवक्षयः ।
दृशो रुक्कामिनीकष्टं धनस्थे धरणीसुते ॥ २ ॥

धनमें बैठा हुआ धरणीसुत (मंगल) अग्नि, चोर और राजा आदिका भय करता वा धन (द्रव्य) का क्षय करता है और नेत्रोंमें रोग तथा स्त्रीको कष्ट देता है ॥ २ ॥

नृपमानधनप्राप्ती रिपुनाशो निरामयम् ।
गेहे महोत्सवो नित्यं तृतीये भूमिनन्दने ॥ ३ ॥

तीसरे मंगल हो तो घरमें नित्य मंगल महोत्सव करता है, राजासे धन मानकी प्राप्ति करता है और शत्रुओंका नाश तथा रोगको दूर करता है ॥ ३ ॥

देशाटनं च संकष्टं सुहृदुःखं सुहृत्क्षयः ।
कुटुम्बकलहश्चैव चतुर्थे भूमिनन्दने ॥ ४ ॥

चौथे मंगल हो तो देशाटन, संकष्ट, भाइयोंको दुःख, भाइयोंका क्षय और कुटुम्बसे क्लेश करता है ॥ ४ ॥

पुत्रार्तिः कामिनीकष्टं व्याधिश्चैवोदरे नृणाम् ।
दुर्मतिस्स्वजनैर्वादः पञ्चमे भूमिनन्दने ॥ ५ ॥

पाँचवें मंगल हो तो पुत्रको दुःख, स्त्रीको कष्ट, उदर (पेट) में तकलीफ, खोटी बुद्धि और अपने आदमियोंसे विवाद होता है ॥ ५ ॥

इष्टस्वजनतस्सौख्यं धनलाभरिपुक्षयौ ।
प्रमोदो नृपतेर्मानं षष्ठस्थानगते कुजे ॥ ६ ॥

छठे स्थानगत मंगल हो तो इष्ट मित्र, स्वजनादिका सुख,

धनका लाभ, शत्रुओंका क्षय, आनंद और राजासे मान करता है ॥ ६ ॥

जायाकष्टं तथा हानिः पीडा आत्मन एव च ।
देशभ्रंशं भयमसौ कुर्याद्भौमस्तु सप्तमे ॥ ७ ॥

सातवें मंगल हो तो स्त्रीका कष्ट तथा हानि, आत्मपीड़ा, देशभ्रंश और भय करता है ॥ ७ ॥

रक्तपित्तप्रकोपश्च महापीडा धनव्ययः ।
विपत्तिरिष्टवर्गस्य अष्टमस्थे धरासुते ॥ ८ ॥

आठवें मंगल हो तो रक्तपित्तका प्रकोप होता है, बड़ी पीड़ा होती है, धनका खर्च होता है और मित्रवर्गकी विपत्ति होती है ॥ ८ ॥

पापलब्धिर्भवेत्पुंसामुद्वेगो विभवक्षयः ।
कलहो बन्धुवर्गैश्च नवमे धरणीसुते ॥ ९ ॥

नौवें मंगल हो तो पुरुषको पापकी प्राप्ति होती है, उद्वेग और धनका नाश होता है और भाईलोगोंसे कलह होता है॥९॥

व्यापारे धनलाभश्च प्रसादो भूमिपालतः ।
तेजोवृद्धिस्तथाऽऽरोग्यं दशमस्थे महीसुते ॥१०॥

दशवें मंगल हो तो व्यापारमें धनलाभ, राजाकी कृपा, तेजकी वृद्धि और आरोग्य होता है ॥ १० ॥

जायापुत्रसुहृत्सौख्यं प्रतापो विभवागमः ।
शत्रुक्षयं नृपात्सौख्यं लाभगे भूमिनंदने ॥ ११ ॥

ग्यारहवें मंगल हो तो स्त्री, पुत्र, भाई इनका सुख, प्रताप, सम्पत्तिका आगम, शत्रुओंका नाश और राजासे सुख मिलता है ॥ ११ ॥

दृशो रोगो वपुःकष्टं धननाशो नृपाद्भयम् ।
सुतजीवादिजं दुःखं हायने द्वादशे कुजे ॥ १२ ॥

वर्षमें बारहवें मंगल हो तो नेत्रोंमें रोग, शरीरमें कष्ट, धनका नाश, राजासे भय, पुत्र जीव (अन्यप्राणी) आदिका दुःख होता है ॥ १२ ॥ इति । (३६)

अथ बुधभावफलम् ।

देहे सौख्यं धियो वृद्धिर्नृपमानं धनागमः ।
तेजोधैर्यस्य वृद्धिश्च वर्षे सौम्ये विलग्नगे ॥ १ ॥

वर्षमें बुध लग्नमें हो तो शरीरमें सुख, बुद्धिकी वृद्धि, राजमान, धनका आगम, तेज और धैर्यकी वृद्धि होती है॥१॥

शरीरं नीरुजं नित्यं द्रव्यलाभो भवेन्नृणाम् ।
इष्टस्वजनजं सौख्यं रौहिणेये कुटुम्बगे ॥ २ ॥

दूसरे बुध हो तो शरीर निरोग, धनका नित्य लाभ और इष्ट मित्र तथा अपने जनोंसे सुख होता है ॥ २ ॥

लाभालाभं सुखं दुःखं शत्रुमित्रैश्च संगमम् ।
वर्षकाले यदा चान्द्रिः सहजे कुरुते नृणाम् ॥ ३ ॥

तीसरे बुध हो तो मनुष्योंके लाभ, हानि, सुख दुःख और शत्रु मित्रोंका संगम करता है ॥ ३ ॥

मित्रस्त्रीबन्धुजं सौख्यं चतुरङ्घ्रिधनागमम् ।
वर्षे चतुर्थगश्चान्द्रिः कुरुते नियतं नृणाम् ॥ ४ ॥

वर्षमें चौथे बुध हो तो मनुष्यके मित्र, स्त्री और भाइयोंसे उत्पन्न हुआ सुख होता है और चौपाये धनका आगम होता है ॥४॥

जायापुत्रसुहृत्सौख्यं मानं भूपालसम्भवम् ।
प्राप्यते बुद्धितो द्रव्यं पञ्चमे शशिनन्दने ॥ ५ ॥

पांचवें बुध हो तो स्त्री, पुत्र और भाइयोंका सुख, राजमानका संभव और बुद्धिसे द्रव्यकी प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

शत्रुपक्षविवृद्धिं च विवादं स्वजनैस्सह ।
शरीरे रोगजां पीडां कुर्यात्सौम्यस्तु षष्ठगः ॥ ६ ॥

छठे बुध हो तो शत्रुपक्षकी वृद्धि, अपने लोगोंके साथ विवाद और शरीरमें रोगोत्पन्न पीड़ा करता है ॥ ६ ॥

मार्गाल्लाभोऽङ्गनासौख्यं वाणिज्याच्च धनागमम् ।
चंद्रजः कुरुते नित्यं हायने सप्तमो यदा ॥ ७ ॥

वर्षमें जब सातवें बुध हो तो रास्तासे लाभ, स्त्रीको सौख्य और वाणिज्यसे धनकी प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

लाभं सौख्यं प्रमोदश्च राजपूजां रिपुक्षयम् ।
विदधाति नृणां वर्षे सौम्यो मृत्युगतस्सदा ॥ ८ ॥

आठवें बुध हो तो मनुष्योंके लाभ, सुख, अत्यंत आनन्द राजपूजा और शत्रुओंका क्षय इनका विधान करताहै ॥ ८ ॥

(साधारणतः छठे आठवें सौम्यग्रहोंको लोग बुरा समझते हैं किन्तु यहां तो तो आठवें बुधका फल उत्तम ही लिखा है परन्तु जातकमें सुदर्शनचक्र एक प्राचीन ग्रन्थ है उसमें भी सौम्यादिकोंका छठे, आठवें आदिमें बैठना बहुत अच्छा लिखा है ।)

धर्मबुद्धिस्तथोद्वेगं दैन्यं जायाप्रपीडनम् ।
चन्द्रजः कुरुते वर्षे नवमस्थो यदा नृणाम् ॥ ९ ॥

जब वर्षमें नौवें बुध हो तो मनुष्यकी धर्ममें बुद्धि, पीछे उद्वेग, दीनता और स्त्रीको पीड़ा करता है ॥ ९ ॥

वाणिज्याद्राजवर्गाच्च धनलाभं सुहृत्सुखम् ।
बलं कान्तिविवृद्धिश्च हायने दशमे बुधः ॥ १० ॥

वर्षमें दशमें बुध हो तो वाणिज्यसे और राजवर्गसे धनका लाभ करता है भाइयोंका सुख तथा बल कान्तिकी विशेष वृद्धि करता है ॥ १० ॥

द्रव्यलाभं तथा सौख्यं प्रभोः प्रीतिविवर्धनम् ।
शुभः कृपाणकाल्लाभो लाभस्थाने यदा बुधः ११

ग्यारहवें बुध हो तो द्रव्यका लाभ तथा सुख, स्वामीकी प्रीतिकी वृद्धि और कृपाणसे शुभ लाभ होता है ॥ ११ ॥

स्वल्पलाभमनारोग्यं व्ययं बहु नृपाद्भयम् ।
स्ववर्गे कलहं नित्यं कुर्यात्सौम्यस्तु रिष्फगः ॥१२

बारहवें बुध हो तो थोड़ा लाभ, कुछ बीमारी, अधिक खर्च, राजासे भय और अपने वर्गसे नित्य कलह करता है ॥ १२ ॥ इति ॥ (४८)

अथ गुरुभावफलम् ।

सौख्यं पुत्रकलत्रादेर्वपुरारोग्यसन्मती ।
लाभः सेवासुखं भूपमानं लग्नगते गुरौ ॥ १ ॥

लग्नमें बृहस्पति हो तो स्त्री पुत्रादिकोंका सुख, शरीर

आरोग्य, श्रेष्ठ बुद्धि, लाभ, सेवासे सुख और भूपमान होता है ॥ १ ॥

धनलाभस्तथाऽऽरोग्यं प्रमादो बन्धुवर्गतः ।
प्रचण्डैस्सदृशो भोगो देवेज्यो धनगो भवेत् ॥२॥

यदि बृहस्पति दूसरे हो तो मनुष्योंको धनलाभ, भाइयोंसे आनन्द और प्रचण्ड सदृश भोग मिलता है ॥ २ ॥

तृतीयेऽल्पसुखं लाभः सुहृद्बन्धुसमागमः ।
नृणां स्त्रीपक्षतः सौख्यं सेवायाश्च सुखं गुरौ ॥ ३॥

तीसरे बृहस्पति हो तो मनुष्यके थोडा सुख, लाभ, मित्र और भाइयोंका समागम, स्त्रीपक्षसे सुख और सेवामें सुख होता है ॥ ३ ॥

जायापुत्रसुहृत्सौख्यं नृपमानं धनागमः ।
भूमिवाहनविद्याप्तिश्चतुर्थे हायने गुरौ ॥ ४ ॥

वर्षमें चौथे बृहस्पति हो तो स्त्री, पुत्र, भ्रातृसुख, नृपमान, धनागम और पृथ्वी, सवारी तथा विद्याकी प्राप्ति होती है॥४॥

सद्बुद्धिस्सन्ततेः प्राप्तिः सौख्यं लाभो भवेन्नृणाम् ।
मन्त्रविद्यादिजं सौख्यं पञ्चमस्थे सुरार्चिते ॥ ५ ॥

पांचवें बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ बुद्धि, सन्तानकी प्राप्ति, सौख्य, लाभ और मन्त्रविद्यादिजनित सुख होता है ॥ ५ ॥

रिपुवृद्धिमथोद्वेगं धननाशं बलक्षयम् ।
इष्टस्वजनविद्वेषं षष्ठे देवपुरोहिते ॥ ६ ॥

छठे बृहस्पति हो तो शत्रुवृद्धि और उद्वेग, धननाश और बलका क्षय और इष्ट, मित्र एवं स्वजनोंसे बड़ा वैर होता है॥ ६॥

वाणिज्याद्व्यवहाराच्च मार्गाच्चैव धनागमः ।
स्त्रीसुखं राजसम्मानं सप्तमे सुरमन्त्रिणि ॥ ७ ॥

सातवें बृहस्पति हो तो वाणिज्यसे, व्यवहारसे और मार्गसे धनकी प्राप्ति होती है, स्त्रीका सुख तथा राजासे सम्मान मिलता है ॥ ७ ॥

धनव्ययस्त्वनारोग्यं कलहो मित्रवर्गतः ।
वियोगश्च प्रवासश्च जायापुत्रादिपीडनम् ॥ ८ ॥

आठवें बृहस्पति हो तो धनका खर्च, कुछ तकलीफ, मित्रवर्गसे कलह, वियोग, प्रवास और स्त्री पुत्रआदिको पीड़ा हो ८॥

धनलाभो राजसौख्यं धर्मकार्यं भवेत्सदा ।
प्राप्नोति विविधान्भोगान्देवेज्ये नवमस्थिते ॥ ९ ॥

नौवें बृहस्पति हो तो धनलाभ, राजसुख, धर्मके काम और नानाप्रकारके भोगोंकी प्राप्त होती है ॥ ९ ॥

सत्कीर्तिर्भूभृतो मानं धनलाभः सुहृत्सुखम् ।
गेहे महोत्सवो नित्यं देवेज्यो दशमे यदि ॥ १० ॥

यदि दशवें बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ कीर्ति, राजाओंसे मान, धनका लाभ, सुहृद्का सुख और घरमें नित्य ही महोत्सव हो ॥ १० ॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं जायापत्यसुहृत्सुखम् ।
नृणां चतुष्पदप्राप्तिर्देवेज्यो लाभगो यदि ॥ ११ ॥

यदि ग्यारहवें बृहस्पति हो तो आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, स्त्री. पुत्र, भाई इनका सुख होता है और मनुष्यको चतुष्पद्की प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

स्वजनैर्विग्रहं दुःखं क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययः ।
प्रवासो नृपतेर्भीतिर्देवेज्ये व्ययसंस्थिते ॥ १२ ॥

बारहवें बृहस्पति हो तो अपने लोगोंसे विग्रह, दुःख, क्षयकी उत्पत्ति एवं धनका खर्च, प्रवास और राजासे भय होता है ॥ ११ ॥ इति (६०)

अथ भृगुभावफलम् ।

सौख्यं लाभः प्रमोदश्च कुलवृद्धिर्भवेन्नृणाम् ।
मानं भूमिपतेर्दत्तं दैत्येज्यो लग्नगो यदि ॥ १ ॥

यदि लग्नमें शुक्र हो तो मनुष्यके सुख, लाभ, आनंद, कुलकी वृद्धि और राजाका दिया हुआ मान मिलता है ॥ १ ॥

धनलाभः सुहृद्वृद्धिः स्त्रीसुखं शत्रुसंक्षयः ।
कान्तिवृद्धिर्नृणां देहे दैत्येज्यो धनगो भवेत् ॥ २ ॥

दूसरे स्थानमें शुक्र हो तो धनका लाभ, भाइयोंकी वृद्धि, स्त्रीका सुख, शत्रुओंका सम्यक् क्षय और शरीरमें तेजकी वृद्धि होती है ॥ २ ॥

तृतीयेऽल्पसुखं पुंसां धनव्यय उपद्रवः ।
विवादः स्वजनैस्सार्द्धं वर्षे दैत्यपुरोहिते ॥ ३ ॥

वर्षमें तीसरे शुक्र हो तो पुरुषको थोड़ा सुख, धनका व्यय, उपद्रव और स्वजनोंसे विवाद होता है ॥ ३ ॥

नृपमानमथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमः ।
मित्रस्वजनजं सौख्यं हायने हिबुके भृगौ ॥ ४ ॥

वर्षमें चौथे शुक्र हो तो राजासे मान अथवा ऐश्वर्यकी प्राप्ति, आरोग्यता, धनदौलतका आगमन और मित्रादिकोंसे सुख होता है ॥ ४ ॥

जायापुत्रादिजं सौख्यं सद्बुद्धिर्विभवागमः ।
मन्त्रोपदेशे कौशल्यं पंचमे भृगुनन्दने ॥ ५ ॥

पांचवें शुक्र हो तो स्त्री पुत्रादिका सुख, श्रेष्ठ बुद्धि, धनका आगम और मंत्रके उपदेशमें चतुर होता है ॥ ५ ॥

वातश्लेष्मभवा बाधा क्षयोत्पत्तिर्धनक्षयः ।
महाभयं गृहे कष्टं वर्षे षष्ठगते भृगौ ॥ ६ ॥

वर्षमें छठे शुक्र हो तो वातकफकृत बाधा, क्षयकी उत्पत्ति, धनका नाश और बड़ा भय तथा घरमें कष्ट होता है ॥ ६ ॥

दयितापुत्रजं सौख्यं वाणिज्याद्विभवागमः ।
मार्गाल्लाभः प्रमोदश्च सप्तमे भृगुजे नृणाम् ॥ ७ ॥

सातवें शुक्र हो तो मनुष्यके स्त्रीपुत्रसे सुख, वाणिज्यसे धनकी प्राप्ति, मार्गसे लाभ और अत्यंत मोद होताहै ॥ ७ ॥

अल्पलाभस्त्वनारोग्यं जायापुत्रादिपीडनम् ।
धर्मनाशः प्रवासश्च भृगुपुत्रेऽष्टमस्थिते ॥ ८ ॥

शुक्र आठवें बैठा हो तो कम लाभ, कुछ रोग, तकलीफ, स्त्री पुत्रादिको पीडा, धर्मका नाश और प्रवास होता है ॥ ८ ॥

शरीरे चैवमारोग्यं सद्बुद्धिर्विभवागमः ।
पुत्रजायादिकं सौख्यं नवमे भृगुजे नृणाम् ॥ ९ ॥

नौवें शुक्र हो तो शरीरमें आरोग्य, श्रेष्ठ बुद्धि, द्रव्यादिका आगमन और पुत्र स्त्रीआदिका सुख होता है ॥ ९ ॥

नृपमानं सुहृत्सौख्यं धनलाभो रिपुक्षयः ।
सर्वारम्भाः प्रसिद्ध्यन्ति दैत्येज्ये दशमे नृणाम् १०

मनुष्यके दशवें शुक्र हो ता राजासे मान, भाइयोंसे सुख, धनका लाभ, शत्रुका नाश और सब आरंभ किये कार्योंकी सिद्धि होती है ॥ १० ॥

जलमार्गाद्धनप्राप्तिस्तथा शुभकृपाणकात् ।
प्रियागमस्तथा सौख्यं लाभगे भृगुनन्दने ॥ ११ ॥

ग्यारहवें शुक्र हो तो जलमार्गसे तथा शुभ कृपाणसे धनकी प्राप्ति होती है । प्यारीका आगमन और सुख होता है ॥ ११ ॥

मित्रस्वजनविद्वेषस्सन्मार्गविभवव्ययः ।
निस्संगत्वं प्रवासश्च द्वादशे भृगुजे नृणाम् ॥ १२ ॥

बारहवें शुक्र हो तो मनुष्यके मित्र तथा स्वजनोंसे वैर होता है, अच्छे रस्तेसे धन खर्च होता है और निःसंगत्व (किसीके साथ न रहना) तथा प्रवास (एकांत वास) होता है ॥ १२॥ इति ॥ (७२)

अथ शनिभावफलम् ।

कफमारुतकोपश्च शिरोजठरपीडनम् ।
इष्टद्वेषो वक्त्रपीडा वर्षे लग्नगते शनौ ॥ १ ॥

वर्षमें शनैश्चर हो तो कफ एवं बादीका कोप, शिर तथा जठरमें पाड़ा, मित्रोंसे वैर और मुखमें पीडा होतीहै ॥ १ ॥

पीडा वक्त्रे तथा नेत्रे धननाशो नृपाद्भयम् ।
पुत्रजायादिकष्टं च द्वितीये रविनन्दने ॥ २ ॥

दूसरे शनि हो तो मुखमें पीड़ा तथा नेत्रोंमें पीड़ा, धनका नाश, राजासे भय और पुत्र-स्त्री आदिको कष्ट होताहै ॥ २ ॥

सर्वदुःखादिमोक्षं च राजमानं धनागमम् ।
वर्षकाले यदा सौरिस्तृतीये कुरुते नृणाम् ॥ ३ ॥

जब वर्षलग्नमें तीसरे शनि हो तो मनुष्यके सब दुःख दूर करता है, राजमान और धनका आगमन करता है ॥ ३ ॥

मातृपक्षे भवेत्कष्टं प्रवासश्च धनक्षयः ।
असन्तोषो राजपीडा चतुर्थे रविनन्दने ॥ ४ ॥

चौथे शनैश्चर हो तो माताके पक्षमें कष्ट, प्रवास, धनका क्षय, असंतोष और राजपीडा होतीहै ॥ ४ ॥

जायापत्यसुहृत्कष्टं दुष्टबुद्धिर्धनक्षयः ।
उदरे वातपीडा च पञ्चमे रविनन्दने ॥ ५ ॥

पांचवें शनि हो तो स्त्री, पुत्र, सुहृद्को कष्ट, खोटी बुद्धि, धनका क्षय और पेटमें वायुपीड़ा होतीहै ॥ ५ ॥

देहे सौख्यं द्रव्यवृद्धिः प्रसादो भूमिपालतः ।
स्त्रीपुत्रजनितं सौख्यं वर्षे षष्ठगते शनौ ॥ ६ ॥

वर्षमें शनि छठे स्थानमें हो तो देहमें सुख, द्रव्यकी वृद्धि, राजासे कृपा और स्त्री पुत्रजनित सुख होताहै ॥ ६ ॥

सततं गमने भीतिः सुहृत्कष्टं धनक्षयः ।
प्रवासः शत्रुतो भीतिः सप्तमे रविनन्दने ॥ ७ ॥

वर्षमें सातवें शनि हो तो गमनमें सदाही भय, भाइयोंको कष्ट, धनका नाश, प्रवास और शत्रुसे भय होताहै ॥ ७ ॥

रोगपीडा महाव्याधिः पुत्रजायादिपीडनम् ।
व्यसनं द्रव्यहानिश्च हायनेऽष्टमगे शनौ ॥ ८ ॥

वर्षमें आठवें शनि हो तो रोगसे पीड़ा, महाव्याधि, स्त्री पुत्रादिको पीड़ा, व्यसन (नशा-जूआआदि) और द्रव्यकी हानि होतीहै ॥ ८ ॥

जायापुत्रसुहृत्कष्टं धननाशो नृपाद्भयम् ।
दुर्म्मतिः पापबुद्धिश्च नवमे भास्करात्मजे ॥ ९ ॥

नौवें शनि हो तो जाया, पुत्र, सुहृद्को कष्ट, धननाश, नृपसे भय, दुष्टमति और पापबुद्धि होतीहै ॥ ९ ॥

व्यापाराद्धनहानिश्च भयं भूपालसम्भवम् ।
सुखे दैन्यं प्रवासश्च दशमे रविनन्दने ॥ १० ॥

दशवें शनि हो तो व्यापारसे धनकी हानि, राजासे भयका संभव, सुखमें दीनता और प्रवास होताहै ॥ १० ॥

द्रव्यागमस्तथैश्वर्यमारोग्यं योषितां सुखम् ।
शूरः स्वल्पाश्रितो लाभो वर्षे लाभगते शनौ॥११

वर्षमें ग्यारहवें शनि हो तो द्रव्यका आगमन तथा ऐश्वर्य होताहै, आरोग्य और स्त्रीका सुख होताहै, शूर हो और थोडे ही आश्रयसे लाभ होताहै ॥ ११ ॥

पादाक्षिहृदये पीडा द्रव्यनाशं नृपाद्भयम् ।
कलहं बन्धुवर्गादौ कुर्यान्मन्दो व्ययस्थितः॥१२॥

बारहवें शनि हो तो पाँव, नेत्र, हृदयमें पीडा, द्रव्यनाश, राजासे भय और बंधुवर्गादिसे क्लेश करताहै ॥ १२ ॥ इति (८४)

राहुभावफलम् ।

देहे मरुत्कृता पीडा कलहो विभवक्षयः ।
पुत्रमित्रादिकं कष्टं राहौ वर्षे विलग्नगे ॥ १ ॥

वर्षमें राहु लग्नमें प्राप्त हो तो देहमें वायुकृत पीडा होतीहै, क्लेश संपत्तिका नाश और पुत्र, मित्र आदिका कष्ट होता है ॥ १ ॥

धनव्ययस्त्वनारोग्यं चिन्तावस्थादिपीडनम् ।
वक्त्रलोचनपीडा च धनस्थे सिंहिकासुते ॥ २ ॥

दूसरे राहु हो तो धनका खर्च, अनारोग्य, चिन्ता, अवस्था आदिकी पीडा, मुखपीडा और नेत्रपीडा होतीहै ॥ २ ॥

राजमानं तथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमः ।
शत्रुक्षयः सुहृत्सौख्यं राहौ वर्षे तृतीयगे ॥ ३ ॥

राहु वर्षमें तीसरे हो तो राजमान तथा ऐश्वर्य, आरोग्य, विभवका आगमन, शत्रुका क्षय और भाईसे सुख होताहै ॥ ३ ॥

चिन्ता दुःखं प्रवासश्च प्रवादस्स्वजनैः सह ।
चतुष्पदाः क्षयं यान्ति राहुस्तुर्यगतो यदि ॥ ४ ॥

यदि राहु चौथे हो तो चिंता, दुःख, प्रवास स्वजनोंके साथ विवाद और चौपायोंका नाश होताहै ॥ ४ ॥

पुत्रसौख्यं सुतप्राप्तिर्दुर्मतिर्वैरिविग्रहः ।
नियतं जठरे पीडा सैंहिकेये तु पंचमे ॥ ५ ॥

राहु पांचवें हो तो पुत्रसौख्य, सुतप्राप्ति, दुर्मति, वैरिविग्रह और जठरमें पीडा होतीहै ॥ ५ ॥

नृपप्रसाद आरोग्यं धनलाभो रिपुक्षयः ।
कलत्रपुत्रजं सौख्यं वर्षे षष्ठे विधुन्तुदे ॥ ६ ॥

वर्षमें छठे राहु हो तो नृपकी कृपा, आरोग्य, धनलाभ, शत्रु-क्षय और स्त्री, पुत्रोंसे उत्पन्न हुआ सुख होताहै ॥ ६ ॥

प्रवासः पीडनं चाङ्गे स्त्रीकष्टं पवनोत्थरुक् ।
कटिवस्तौ भवेत्पीडा सैंहिकेये च सप्तमे ॥ ७ ॥

राहु सातवें हो तो प्रवास, अंगमें पीडा, स्त्रीकष्ट, पवनसे उठा हुआ रोग और कटि एवं वस्तिस्थानमें पीडा होती है ॥७॥

धनव्ययस्त्वनारोग्यं विवादो बन्धुभिस्सह ।
स्त्रीकष्टं च प्रवासश्च राहुरष्टमगो यदि ॥ ८ ॥

यदि राहु आठवें हो तो धनका व्यय, अनारोग्य, भाइयोंके साथ विवाद, स्त्रीको कष्ट और प्रवास होता है ॥ ८ ॥

विद्वेषश्च वपुःपीडा दैन्यं राजादिपीडनम् ।
धर्मकार्ये विलम्बश्च राहुर्धर्मगतो यदि ॥ ९ ॥

यदि राहु नौवें हो तो बडा वैर, शरीरपीडा, दीनता, राजा-दिकी पीडा और धर्मके काममें विलम्ब होता है ॥ ९ ॥

भूमिनाशो भयं नित्यं देहपीडा धनक्षयः ।
इष्टस्वजनविद्वेषं राहौ दशमसंस्थिते ॥ १० ॥

राहु दशवें बैठा हो तो भूमि (खेती बाडीबागादिक)का

नाश, नित्य भय, देहमें पीडा, धनका क्षय और मित्र तथा स्वजनोंसे वैर होता है ॥ १० ॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यं स्त्रीसुखं विभवागमः ।
सङ्कीर्णवर्णतो लाभो राहुर्लाभगतो यदि ॥ ११ ॥

यदि ग्यारहवें राहु हो तो शरीर आरोग्य रहता है । ऐश्वर्य, स्त्रीसुख और विंभवका आगमन होता है और संकीर्ण (ओछी-जाति) से लाभ होता है ॥ ११ ॥

धनव्ययश्च कष्टं च राजपीडा रिपुक्षयः ।
जायापीडा भवेन्नित्यं स्वभानुर्द्वादशे यदि ॥ १२ ॥

(केतोः फलं राहुसमं विज्ञेयम् ।)

इति हायनफलरत्नान्तर्गतमणित्थोक्त द्वादशभावफलं समाप्तम् ।

यदि बारहवें राहु हो तो धनका खर्च, कष्ट, राजपीडा, शत्रुनाश और नित्य ही स्त्रीको पीडा होती है ॥ १२ ॥

(केतुका फल राहुके समान जानना) इति (९६)

सामान्यतो भावविचारः ।

यो भावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तोऽयमेधते ।
पापदृष्टयुतो नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ १ ॥

सामान्यरूपसे भावविचार इस प्रकार करना कि, जो भाव अपने स्वामी और सौम्य ग्रहोंसे युक्त किंवा दृष्ट हो तो उस भावकी वृद्धि होती है। पापग्रहोंसे दृष्ट युक्त हो तो नाश होता है और मिश्रसे मिला हुआ फल होता है ॥ १ ॥

भावनाथो यथा पश्येद्भावं कार्यकरः स्मृतः ।
आक्रांतोऽपि च यः पश्येत्परतः कार्यसिद्धिकृत् २॥

भावनाथ जैसा भावको देखता हो वैसा कार्य करनेवाला होता है और आक्रांत होकर भी देखता हो तो परायेके साथमें कार्यसिद्धि करनेवाला होता है ॥ २ ॥

नीचस्थो रिपुगेहस्थो ग्रहो भावविनाशकृत् ।
उदासीनगृहे मध्यो मित्रस्वर्क्षत्रिकोणगः ॥
स्वोच्चगश्च ग्रहोऽवश्यं भाववृद्धिकरः स्मृतः॥ ३ ॥

नीचका और शत्रुके घरमें बैठा हुआ ग्रह भावका नाश करता है । उदासीन राशिमें मध्यम फल करता है और अपने उच्चका हो (तथा मित्रसे दृष्ट हो) तो वह ग्रह भावकी अवश्य वृद्धि करता है अर्थात् उस भावसे होनेवाला फल पूर्णरूपसे मिलता है ॥ ३ ॥

षष्ठाष्टव्ययभावेषु विचारे वैपरीत्यमाह सत्याचार्यः

छठे आठवें बारहवें स्थानोंमें क्रूरग्रह शुभ और सौम्यग्रह अशुभ माने जाते हैं परंतु इस विचारमें सत्याचार्यका मत विपरीत है । यथा-

सौम्याः पुष्टिं पापा विपर्यये संश्रिता ग्रहाः कुर्युः । मूर्त्यादिषु निधनान्तारिषु भावेषूत्क्रमात्फलं दद्युः ॥ ४ ॥

लग्न आदि भावोंमें सौम्यग्रह पुष्टि करते हैं और पापग्रह हानि करते हैं किंतु आठवें बारहवें भावोंमें विपरीत फल देते हैं अर्थात् लग्नादि भावोंमें सौम्य ग्रह हो तो शरीर-सुखादिकी वृद्धि करते हैं और पापग्रह हों तो हानि करते हैं । ऐसे ही छठे आठवें बारहवेंमें सौम्यग्रह हानि करते हैं अर्थात् छठेमें शत्रुहानि, आठवेंमें मृत्युहानि और बारहवेंमें व्ययहानि करते हैं तो इससे तात्पर्य यह हुआ कि ६।८।१२ वेंमें सौम्य ग्रह अच्छा फल करते हैं और पापग्रह बुरा ॥ ४ ॥

यस्मिन्भावे भावनाथेन युक्तो लग्नस्वामी तस्य भावस्य वृद्धिम् । कुर्यान्नित्यं मृत्युनाथेन युक्तो यस्मिन्भावे तस्य हानिं सदैव ॥ ५ ॥

जिस भावमें भावनाथसहित लग्नेश हो उस भावकी वृद्धि

होती है और मृत्युनाथसे युक्त जिस भावमें हो उस भावकी सदैव हानि होती है ॥ ५ ॥

विशेषविचारः ।

स्वोच्चस्ववेश्मास्तगनीचशत्रुहद्दादिवर्गस्थित-
खेचराणाम् । बलाबलत्वादि विचार्य सम्यक्
प्रोक्तानुसारेण वदेत्फलं तु ॥ ६ ॥

स्वोच्च, स्वगृही, अस्त, नीच, शत्रुगत और हद्दादि वर्गमें बैठे हुए ग्रहका भलेप्रकार बलाबल विचारकर उसके अनुसार फल कहना चाहिये ॥ ६ ॥

खेचारिणां भावफलानि यानि
तानीह कल्प्यानि दशासु तेषाम् ॥ ७ ॥

यह जो ग्रहोंका भावफल है वह उन ग्रहोंकी दशामें होता है ॥ ७ ॥ इति ॥

मुथहाभावफलम् ।

शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः
प्रसादम् । शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च ददाति
सौख्यं मुथहा तनुस्था ॥ १ ॥

मुथहा लग्नमें हो तो शत्रुओंका क्षय, मनसंतोषलाभ, प्रता-

पकी वृद्धि, राजाकी कृपा, शरीरकी पुष्टि और कई उद्यमोंसे सुख देती है ॥ १ ॥

उत्साहतोऽर्थागमनं यशश्च स्वबन्धुसम्मान-
नृपाश्रयाश्च । मिष्टान्नभोगो बलपुष्टिसौख्यं
स्यादर्थभावे मुथहा यदाऽब्दे ॥ २ ॥

वर्षमें जब दूसरे घरमें मुथहा हो तो उत्साहसे धनका लाभ, यश, राजाश्रय, स्वबन्धुका सम्मान, मिठाइयोंका भोजन, बल, पुष्टि और सुख होता है ॥ २ ॥

पराक्रमाद्वित्तयशस्सुखानि सौन्दर्यसौख्यं
द्विजदेवपूजा । सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकान्ति-
नृपाश्रयैश्चेन्मुथहा तृतीया ॥ ३ ॥

तीसरे मुथहा हो तो पराक्रमसे धन, यश और सुख हो । सौंदर्यसुख मिले । ब्राह्मण और देवपूजा बन सके । सबका उपकार करे । शरीरकी पुष्टि हो और राजाके आश्रयसे तेज बढ़े ॥ ३ ॥

शरीरपीडा रिपुभिः स्ववर्गैर्वैरं मनस्ताप-
निरुद्यमत्वे । स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां
जनापवादो भयवृद्धिदुःखम् ॥ ४ ॥

यदीन्थिहा पञ्चमगाब्दवेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मज-
वित्तलाभः । प्रतापवृद्धिर्विविधो विलासो
देवद्विजार्चा नृपतिप्रसादः ॥ ५ ॥

यदि वर्ष बैठते समय पांचवे मुथहा हो तो श्रेष्ठ बुद्धि, पुत्रका सुख, धनका लाभ, प्रतापकी वृद्धि, कई प्रकारके विलास (आनंद), देवद्विजोंकी पूजा और राजाकी कृपा होती है ॥ ५ ॥

कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च भयं रुजस्तस्क-
रतो नृपाद्वा । कार्यार्थनाशो मुथहाऽरिगा
चेद्दुर्बुद्धिवृद्धिः स्वकृतेऽनुतापः ॥ ६ ॥

छठे मुथहा हो तो शरीरमें दुर्बलता, शत्रुओंका उदय, रोग चौर तथा राजाका भय, कार्य और धनका नाश, खोटी बुद्धिकी वृद्धि और अपने किये पर पछतावा होता है ॥ ६ ॥

कलत्रबन्धुव्यसनारिभीतिरुत्साहभङ्गो धन-
धर्मनाशः । द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनौ
स्याद् रुजा मनोमोहविरुद्धचेष्टा ॥ ७ ॥

सातवें लग्नमें मुथहा हो तो कलत्र, बंधुव्यसन और शत्रु भय हो । उत्साहका भंग और धन धर्मका नाश तथा रोग, मनोमोह और विरुद्ध चेष्टा हो ॥ ७ ॥

भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्दुर्व्य-
सनामयाश्च । मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां
बलक्षयः स्याद्गमनं सुदूरे ॥ ८ ॥

आठवें मुथहा हो तो शत्रुका भय, चोरसे विनाश, धर्म-अर्थ क्षय, दुर्व्यसन तथा रोगकी उत्पत्ति बलका नाश और सुदूर गमन हो ॥ ८ ॥

स्वामित्वमर्थोपगमो नृपेभ्यो धर्मोत्सवः पुत्र-
कलत्रसौख्यम् । देवद्विजार्चा परमं यशश्च
भाग्योदयो भाग्यगतेऽथहायाम् ॥ ९ ॥

नौवें मुथहा हो तो बडप्पन, धनागमन, धर्मोत्सव, पुत्र-कलत्रादिक सुख, देव द्विजोंका अर्चन, परम यश और भाग्यका उदय होता है ॥ ९ ॥

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विज-
देवभक्तिम् । यशोऽभिवृद्धिं विविधार्थलाभं
दत्तेऽम्बरस्था मुथहा यदा स्यात् ॥ १० ॥

जब दशवें मुथहा हो तो राजाकी कृपा, स्वजनोंका उपकार, अच्छे कामोंकी सिद्धि, द्विज देवोंकी भक्ति, यशकी वृद्धि और ननाप्रकारके द्रव्योंका लाभ देती है ॥ १० ॥

यदीन्थिहा लाभगता विलाससौभाग्यनैरुज्य-
मनःप्रसादाः । भवन्ति राजाश्रयतो धनानि
सन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ॥ ११ ॥

यदि ग्यारहवें मुथहा हो तो विलास, सौभाग्य, निरोगता, मनकी प्रसन्नता, राजाके आश्रयसे धनकी प्राप्ति और अच्छे मित्र तथा पुत्रोंसे अभिमतकी प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

व्ययोऽधिको दुष्टजनैश्च सङ्गो रुजस्तनौ
विक्रमतोऽप्यसिद्धिः । धर्मार्थहानिर्मुथहा व्यय-
स्था यदा तदा सज्जनतोऽपि वैरम् ॥ १२ ॥

बारहवें मुथहा हो तो व्यय अधिक, दुष्ट जनोंका संग, शरीरमें रोग, पराक्रमसे भी असिद्धि, धर्म अर्थकी हानि और सज्जनोंसे भी वैर होता है ॥ १२ ॥ इति ।

सहमफलम् ।

स्वस्वामिना शुभैः खेटैः सहमं युतवीक्षितम् ।
भवेद्बलयुतं स्वामी बलवान् यस्य वा भवेत् ॥ १ ॥

जो सहम अपने स्वामीसे वा शुभग्रहोंसे युक्त हो अथवा देखा जाता हो और उसका स्वामी बलयुक्त हो तो वह सहम बलवान् होता है अर्थात् उसका फल पूर्ण मिलता है ॥ १ ॥

विपर्यये निर्बलत्वमष्टमाधिपसंयुतम् ।
क्रूरेत्थशालसहितं तत्फलं नैव हायने ॥ २ ॥

जो सहम उपरोक्त लक्षणोंसे विपरीत हो, निर्बल हो, अष्टमाधीशसे युक्त हो और क्रूरग्रहोंके इत्थशाल सहित हो तो वर्षमें उसका फल नहीं होता है ॥ २ ॥

सहमस्वामिनि पतिते त्रिकभवनेऽरिष्टं करोत्याचिरात् । सहमे शुभयुतदृष्टे सहमारिष्टं विनाशयति ॥ ३ ॥

सहमका स्वामी पापग्रहोंसे युक्त होकर ६ । ८। १२ घरमें पड़ा हो तो शीघ्र ही अरिष्ट करता है और जो सहम शुभ ग्रहोंसे युक्त किंवा दृष्ट हो तो वह सहमोत्पन्न अरिष्टोंका नाश करता है ॥ ३ ॥ इति ।

वर्षेशफलम्-तत्रादौ वर्षेशविचारः ।

जन्मलग्नाब्दलग्नेशौ द्युनिशार्केन्दुराशिपौ ।
त्रिराशिनायकेन्थेशो ज्ञातव्यास्ते प्रयत्नतः ॥ १ ॥

वर्षेश फल लिखनेसे पहले वर्षेशका विचार करना चाहिये । जन्मपति, वर्षपति, समयपति, त्रिराशिपति और मुन्थहापति इनको यत्नसे जानना चाहिये ॥ १ ॥

एतेषु बलवाँल्लग्नं पश्येद्यः सोऽब्दनायकः ।
अनीक्षमाणो लग्नं च सबलोऽप्यब्दपो नहि ॥ २ ॥

इनमें जो बलवान् लग्नको देखता हो वह वर्षपति होता है और लग्नको न देखनेसे बलवान् हो तो भी वर्षेश नहीं हो सकता ॥ २ ॥ इति ॥

वर्षेशसूर्यफलम् ।

सूर्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थ-
लाभः कुलोचितभवः परिवारसौख्यम् ।
पुष्टिर्यशो गृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा
शत्रुर्विनश्यति फलं जनिखेटयुक्त्या ॥ १ ॥

पूर्णबली सूर्य-वर्षेश हो तो राज्यसुख, पुत्र, कुलोचित धनलाभ, परिवारसौख्य, पुष्टि, यश, गृह सुख, अनेक प्रकारकी प्रतिष्ठा और शत्रुओंका नाश होता है ॥ १ ॥

मध्ये रवौ फलमिदं निखिलं तु मध्यं
स्वल्पं सुखं स्वजनतोऽपि विवादमाहुः ।
स्थानच्युतिर्न च सुखं कृशतापि देहे
भीतिर्नृपान्मुथशिलो न शुभेन चेत्स्यात् ॥ २

मध्यबली सूर्य वर्षेश हो तो यह सब फल मध्यम होता है। एवं थोड़ा सुख, स्वजनोंसे विवाद, स्थानका छूट जाना, देहमें कृशता तथा तकलीफ और राजासे भय होता है और अशुभसे मुथशिल हो तो नहीं होता है ॥ २ ॥

सूर्ये बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेश-
यानं धनक्षयशुचोऽरिभयं च तन्द्रा ।
लोकापवादभयमुग्ररुजोऽतिदुःखं
पित्रादितोऽपि न सुखं सुतमित्रभीतिः ॥ ३ ॥

हीनबली सूर्य–वर्षपति हो तो विदेशमें गमन, धनका नाश, शोक, शत्रुओंका भय, तंद्रा, लोकनिन्दा, भय, असाध्य रोग, अत्यन्त दुःख और पिता आदिसे भी दुःख मिलता है तथा पुत्र मित्रादिसे भय होता है ॥ ३ ॥

वर्षेशचन्द्रफलम् ।

वीर्यान्विते शशिनि वित्तकलत्रपुत्र-
मित्रालयादिविविधं सुखमाहुरार्याः ।
स्रग्गन्धमौक्तिकदुकूलसुखानि भूति-
र्लाभः कुलोचितपदस्य नृपैः सखित्वम् ॥ १ ॥

पूर्णबली चन्द्रमा-वर्षेश हो तो वित्त, कलत्र, पुत्र, मित्र, मकान आदि नाना प्रकारका सुख हो, स्रग्गंध, मौक्तिक दुकूल (पट्ट वस्त्रादि) सुख तथा लाभ हो और कुलोचित पदके अनुसार राजमंत्री हो ॥ १ ॥

वर्षाधिपे शशिनि मध्यबलं फलानि
मध्यान्यमूनि रिपुता सुतमित्रवर्गे ।
स्थानान्तरे गतिरथो कृशता शरीरे
श्लेष्मोद्भवश्च यदि पापकृतेशराफः ॥ २ ॥

मध्यबली चन्द्रमा-वर्षेश हो तो फल मध्यम होता है और सुत मित्रवर्गसे शत्रुता एवं स्थानांतरमें गमन होता है। शरीरमें दुर्बलता और यदि पापकृत ईशराफ हो तो कफकी उत्पत्ति होती है ॥ २ ॥

नष्टेऽब्दपे शशिनि शीतकफादिरोग-
श्चौरादिभीः स्वजनविग्रहमप्युशन्ति ।
दूरे गतिः सुतकलत्रसुखात्ययश्च
स्यान्मृत्युतुल्यमतिहीनबले शशाङ्के ॥ ३ ॥

हीनबली चन्द्रमा, वर्षेश हो तो शीत-कफ आदि रोग, चौरादिका भय, स्वजनोंसे विग्रह, दूरगमन सुत-स्त्रीके सुखका ह्रास और मृत्यु समान दुःख होता है ॥ ३ ॥

भौमफलम् ।

वीर्यान्विते क्षितिसुते नृपतेर्धनाप्तिः
सेनेशता रिपुगणाद्विजयो रणेषु ।
सेवाधनं भवति मार्गवशाच्च सौख्यं
स्त्रीसङ्गतश्च विविधं सुखमत्र विन्द्यात् ॥ १ ॥

पूर्णबली मंगल-वर्षेश हो तो राजासे धन तथा सेनापति पदकी प्राप्ति, संग्राममें शत्रुओंसे विजयकी प्राप्ति, सेवाधन मार्गवशसे सुखकी प्राप्ति और स्त्री संगसे नानाप्रकारके सुखोंकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

मध्ये कुजे भवति लोहभयं विवादः
कुर्यात्कृशत्वमखिलाङ्गमनल्परोगम् ।
वैरोदयं नृपजनेषु धनक्षयं च
चौराद्भयं स्वजनतो ह्यथवा नराणाम् ॥ २ ॥

मध्यबली मंगल-वर्षेश हो तो लोहभय तथा विवाद होता है । अधिक रोगसे सब शरीर सूख जाता है । नृपजनोंमें वैरका उदय, धनका क्षय, चौरोंसे भय और स्वजनोंसे भय होता है ॥ २ ॥

चौरास्त्ररुग्ज्वलनभीतिरकीर्तिलाभः
पित्तोदयो भवति पादमुखाक्षिदेशे ।
दुष्टाद्भयं निजजनाद्धनधान्यनाशः
स्त्रीपुत्रमित्रकलहः क्षितिजे विनष्टे ॥ ३ ॥

हीनबली मंगल-वर्षेश हो तो चौर, अस्त्र, रोग, ज्वलन इनका भय, अपकीर्तिका लाभ, पाँव, मुख, नेत्रमें पित्तका उदय, दुष्टसे भय, निजजनसे धन धान्यका नाश और स्त्री पुत्र मित्रसे क्लेश हो ॥ ३ ॥

बुधफलम् ।

सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवादलेख्य-
सच्छास्त्रसद्व्यवहृतौ विजयोऽर्थलाभः ।
ज्ञानं कलागणितवैद्यभवं गुरुत्वं
राजाश्रयेण नृपता नृपमन्त्रिता वा ॥ १ ॥

पूर्णबली बुध-वर्षेश हो तो प्रतिवादलेख्य, सत्शास्त्र सद्व्यवहारमें विजय और अर्थलाभ हो । कलाशास्त्र, गणितशास्त्र, वैद्यविद्या इनमें ज्ञान, राजाश्रयसे गुरुत्व (बड़ाई) और नृपता तथा नृपमन्त्रित्व इनकी प्राप्ति हो ॥ १ ॥

अब्दाधिपे शशिसुते खलु मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाध्वयानम् ।
वाणिज्यवर्त्मन अथात्मजमित्रसौख्यं
सौम्येत्थशालवशतोऽपरथा न किञ्चित् ॥ २ ॥

मध्यबली बुध-वर्षेश हो तो यह सब फल मध्यम होता है और अध्वयान, वाणिज्य, वर्त्म, आत्मज और मित्र इनसे सुख होता है किन्तु सौम्येत्थशाल वशसे होता है अन्यथा नहीं॥२॥

सौम्येऽब्दपेऽधमबले बलबुद्धिहानि-
र्द्धर्मक्षयः परिभावो निजवाक्यदोषात् ।
निक्षेपतो विपदतीव मृषैव साक्ष्यं
हानिः परव्यवहृतैः सुतवित्तमित्रैः ॥ ३ ॥

हीनबली बुध-वर्षेश हो तो बल बुद्धिकी हानि, धर्मका क्षय, निजवाक्य दोषसे परिभव, निक्षेपसे अत्यंत विपद्, झूँठी साक्षी और परव्यवहृत सुत वित्त मित्रसे हानि होती है ॥ ३ ॥

गुरुफलम् ।

जीवेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं
धर्मो गुणग्राहिलता धनकीर्त्तिपुत्राः ।

विश्वास्यता जगति सन्मतिविक्रमाप्ति-
र्लाभो निधेर्नृपतिगौरवमप्यरिघ्नम् ॥ १ ॥

पूर्णबली बृहस्पति-वर्षेश हो तो परिवार, धर्म, गुणग्राहकता, धन, कीर्ति, पुत्र इनका सुख हो । जगत्में विश्वास बढ़े, श्रेष्ठ बुद्धि हो, बलकी प्राप्ति, द्रव्यलाभ, राजासे गौरव हो और शत्रुका नाश हो ॥ १ ॥

अब्दाधिपे सुरगुरौ किल मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं फलमिदं नृपसङ्गमश्च ।
विज्ञानशास्त्रपरता न शुभेसराफे
दारिद्र्यमर्थविलयश्च कलत्रपीडा ॥ २ ॥

मध्यबली बृहस्पति-वर्षेश हो तो यह फल मध्यम होता है । नृपसंगमें और विज्ञान शास्त्रमें परायणता हो और अशुभ ईसराफसे दारिद्र्य, अर्थविलय (धनका विशेश नाश) और स्त्रीपीडा हो ॥ २ ॥

जीवेऽब्दपेऽधमबले नृपतोऽर्थसौख्य-
हानिस्त्यजन्ति सुतमित्रजनास्सभार्याः ।
लोकापवादभयमाकुलतापि कष्ट-
वृत्तिस्तनौ कफरुजो रिपुभीः कलिश्च ॥ ३ ॥

हीनबली बृहस्पति-वर्षेश हो तो राजासे धन सुखकी हानि हो और स्त्री सहित सुत मित्रजन त्याग देवें । लोकनिन्दाका भय, आकुलता, कष्टवृत्ति, शरीरमें कफरोग और शत्रुभय एवं क्लेश हो ॥ ३ ॥

शुक्रफलम् ।

शुक्रेऽब्दपे बलिनि नीरुजता विलासः
सद्वस्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः ।
क्षेमप्रतापविजया वनिताविलासो
हास्यं नृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥ १ ॥

पूर्णबली शुक्र-वर्षेश हो तो नैरोग्य, विलास, श्रेष्ठ वस्त्र, रत्न, मधुराशनादिके भोगसे संतोष हो । क्षेम, प्रताप, विजय, वनिताविलास (स्त्रीसुख), हास्यादि हो और राजाके आश्रयसे धन, सुख हो ॥ १ ॥

अब्दाधिपे भृगुसुते खलु मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथापवृत्तिः ।
गुप्तं च दुःखमखिलं सुनिबद्धवृत्तिः
पापारिवीक्षितयुते विपदोऽर्थनाशः ॥ २ ॥

मध्यबली शुक्र-वर्षेश हो तो यह सब मध्यम होता है

अल्पवृत्ति, सब गुप्त दुःख और बँधीहुई वृत्ति हो और वीक्षित हो तो विपत्ति तथा अर्थका नाश हो ॥ २ ॥

शुक्रेऽब्दपेऽधमबले मनसोऽतितापो
लोकोपहासविपदौ निजवृत्तिनाशः ।
द्वेषः कलत्रसुतमित्रजनेषु कष्टा-
दन्नाशनं च विफलक्रियता न सौख्यम् ॥ ३ ॥

हीनबली शुक्र-वर्षेश हो तो मनमें अत्यंत ताप, लोकमें उपहास, विपत्ति, निजवृत्तिका नाश, स्त्री पुत्र मित्रजनोंसे द्वेष, कष्टसे अन्नाशन और निष्फल क्रिया तथा असौख्य हो ॥ ३ ॥

शनिफलम् ।

मन्देऽब्दपे बलिनि सूत्तमभूमिवेश्म-
क्षेत्राप्तिरर्थनिचयो यवनावनीशात् ।
आरामनिर्मितजलाश्रयसौख्यमङ्ग-
पुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाग्रणीश्च ॥ १ ॥

पूर्णबली शनि-वर्षेश हो तो उत्तम भूमि, मकान, क्षेत्र, द्रव्यसमूह यह यवन राजासे मिलें। बगीचा, बनाया हुआ जलका आश्रय इनका सुख हो । अंगपुष्टि, कुलोचित पदकी प्राप्ति और गुणियोंमें अग्रणी हो ॥ १ ॥

अब्दाधिपे रविसुते खलु मध्यवीर्ये
मध्यं फलं निखिलमन्नभुजिस्तु कष्टात् ।
दासोष्ट्रमाहिषकुधान्यरतस्तु लाभः
पापं फलं भवति पापयुगीक्षणेन ॥ २ ॥

मध्यबली शनि-वर्षेश हो तो सब फल मध्यम होता है । कष्टसे अन्न भोगा जाता है । दास, ऊँट, भैंस, कुधान्य इनमें रत हो तथा लाभ भी होता है और पापग्रहोंसे युक्त अथवा ईक्षित होनेसे पापफल होता है ॥ २ ॥

मन्दे बलेन रहितेऽब्दपतौ क्रियाणां
वन्ध्यात्वमर्थविलयो विपदोऽरिभीतिः ।
स्त्रीपुत्रमित्रजनवैरकदन्नभुक्तिः
सौम्येत्थशालयुजि सौख्यमतीवरातिः ॥ ३ ॥

हीनबली शनि-वर्षेश हो तो क्रियाओंमें वंध्यत्व, द्रव्यका विनाश, विपद् और शत्रुका भय, स्त्री, पुत्र, मित्रजनोंसे वैर, कदन्नका भोजन और सौम्येत्थशाल योग होनेसे सौख्य होता है ॥ ३ ॥ इति ।

ग्रहणां दशाफलम् ।

सूर्ये राजकुलाद्भीतिः पीडा स्यात्पित्तसम्भवा ।
विपत्तयश्च बन्धूनां वित्तानां व्यय एव च ॥ १ ॥

सूर्यकी दशामें राजकुलसे भय, पित्तसे उठी हुई पीडा, भाइयोंकी विपत्ति और धनका खर्च होता है ॥ १ ॥

चान्द्र्यां स्त्रीसुतभूलाभो वस्त्राभरणसंयुतम् ।
स्वपक्षवैरं कन्याया जन्म निद्रारतिस्तथा ॥ २ ॥

चन्द्रमाकी दशा हो तो स्त्री, पुत्र, पृथ्वी इनका लाभ हो, वस्त्र और आभूषणोंसे युक्त हो। अपने पक्षसे वैर हो, कन्याका जन्म और निद्रामें रत हो ॥ २ ॥

भौमे शत्रुविमर्दश्च विग्रहो बान्धवैस्सह ।
रक्तपित्तकृता पीडा परस्त्रीभिस्समागमः ॥ ३ ॥

मंगलकी दशा हो तो-शत्रुमर्दन, भाइयोंके साथ विग्रह, रक्तपित्तकृत पीड़ा और परस्त्रीसे समागम हो ॥ ३ ॥

बौध्यां बन्धुसमायोगो मित्रधर्मसमागमः ।
प्रीतिर्जनस्य विपुला देहपीडा त्रिदोषजा ॥ ४ ॥

बुधकी दशा हो तो-भाइयोंका समायोग, मित्रधर्मका समागम, मनुष्योंसे विपुल (बहुत) प्रीति और त्रिदोषपीड़ा हो ॥४॥

जैव्यां मानधनप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम् ।
कर्णरोगस्तथा वैरं स्वजनैश्च कलिर्भवेत् ॥ ५ ॥

गुरुकी दशा हो तो-धन मानकी प्राप्ति, देव ब्राह्मणोंका पूजन, कर्णरोग तथा वैर और स्वजनोंके साथ क्लेश हो ॥ ५ ॥

शौक्र्यां स्त्रीसङ्गमो लाभो वस्त्राभरणसंयुतः ।
कौशल्यं महती कीर्तिर्धनलाभश्च जायते ॥ ६ ॥

शुक्रकी दशा हो तो-स्त्रीसंगमसे लाभ हो, वस्त्राभरणसे संयुक्त हो, कौशल हो, बड़ी कीर्ति हो और धनका लाभ हो ॥ ६ ॥

शनैश्चर्यां देहपीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
तन्द्रा श्रमो बुद्धिनाशो विदेशगमनं भवेत् ॥ ७ ॥

शनिकी दशा हो तो-देहमें पीडा, स्त्री पुत्रसे विग्रह, तंद्रा, श्रम, बुद्धिनाश और विदेशगमन हो ॥ ७ ॥

स्वर्भानौ जायते दुःखं वधूत आत्मनो रुजः ।
देशान्तरेषु गमनं धननाशोऽरिविग्रहः ॥ ८ ॥

राहुकी दशा हो तो-वधूसे दुःख होता है, आत्मामें रोग होता है, देशान्तरमें गमन होता है और धनका नाश एवं शत्रुसे विग्रह होता है (केतुफल राहुके समान है) ॥ ८ ॥ इति ॥

मासफलम् ।

मासप्रवेशलग्ने मणित्थोक्तं भावफलं पद्म-
कोशोक्तं वा स्वबुद्ध्या यथायोग्यं यथासंभवं
च लेखनीयम् ।

मासप्रवेश कुंडलीमें मणित्थोक्त भावफल अथवा पद्मकोशोक्त भावफल वा अपनी बुद्धिके योग्य और जैसा संभव हो वैसा मासफल लिखना चाहिये ॥ +

संक्षेपतो मासभावफलम् ।

तत्र सूर्यभावः ।

अन्यत्रस्थे रवौ लग्ने देहपीडा निरन्तरम् ।
द्वितीये धननाशश्च दुर्वाच्यं स्यात्तृतीयके ॥ १ ॥
चतुर्थे भोजने दौस्थ्यं पुत्रपीडा तु पञ्चमे ।
शत्रुनाशो रिपुस्थे स्याद्द्यूने तुष्टिर्न कुत्रचित् ॥ २ ॥
अष्टमे व्याधिराधिश्च धर्महानिश्च धर्मगे ।
पदाप्तिर्दशमे प्रोक्ता लाभे लाभस्तथा भवेत् ॥
व्यये व्ययो नृपाद्दण्डः सूर्यभावैः फलं स्मृतम् ॥ ३ ॥

+ यह स्मरण रखना कि उपरोक्त मासफलमें जहां "वर्ष" शब्द है वहां " मास " शब्दकी योजना अवश्य करना—इसी योजनासे एक " मासचिंतामणि " नामक पुस्तक ही छप चुकी है। वह कल्याणके " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर स्टीम् " प्रेस में मुद्रित हुई है ॥

मास कुंडलीमें सूर्य पहले घरमें हो तो देहपीडा, २ में धन-नाश ३ में दुर्वाक्य । ४ में भोजनमें तकलीफ । ५ में पुत्रपीडा । ६ में शत्रुनाश । ७ में कहीं भी संतोष नहीं । ८ में व्याधि । ९ में धर्महानि । १० में पदकी प्राप्ति । ११ में लाभ और १२ वें घरमें हो तो राजदंडका व्यय हो ॥ १-३ ॥

चन्द्रभावः ।

लग्नस्थः शुभदः प्रोक्तो धने सौम्येक्षितः स्वदः ।
सहजे सहजात्सौख्यं चतुर्थे भव्यभोजनम् ॥ १ ॥
पञ्चमे सर्वतः सौख्यं रोगसन्तापदो रिपौ ।
निवृत्तिवार्ताश्रवणं सप्तमे लङ्घनं मृतौ ॥ २ ॥
नवमे शत्रुविजयो दशमे स्यान्महत्पदम् ।
लाभे तु वस्त्रलाभः स्याद्व्यये स्यात्सद्व्ययो विधौ ३

महीने लग्नमें चन्द्रमा हो तो शुभ देनेवाला । २ में धन । ३ में भाईसे सुख । ४ में राजसी भोजन । ५ वें में सर्वत्र सुख । ६ में रोग-संताप । ७ में निवृत्तिवातका श्रवण । ८ में लंघन । ९ में शत्रुविजय । १० में बडा भारी पद । ११ में वस्त्रलाभ और १२ में हो तो अच्छा खर्च होता है ॥ १-३ ॥

भौमभावः ।

मूर्तौ नाशो धने हानिः पदप्राप्तिस्तु विक्रमे ।
बुभुक्षामरणं तोये बुद्धिहानिस्तु पञ्चमे ॥ १ ॥
स्वातन्त्र्यं रिपुभे चेष्टं वादः स्त्रीभिस्तु सप्तमे ।
छिद्रे गृहे प्रपीडा स्याद्धर्महानिस्तु धर्मगे ॥ २॥
मित्रभेदस्तु दशमे हानिर्लाभे व्यये व्ययः ॥ ३ ॥

महीनेमें, लग्नमें मंगल हो तो नाश । २ में हानि । ३ में पदप्राप्ति । ४ में भूखसे मरण । ५ में बुद्धिहानि । ६ में स्वतंत्रता । ७ में स्त्रीसे विवाद । ८ में पीडा । ९ में धर्महानि । १० में मित्रभेद । ११ में हानि । १२ में व्यय हो ॥ १–३ ॥

बुधभावः ।

कौटिल्यं लग्नगे सौम्ये द्वितीये वञ्चनाद्धनम् ।
मिथ्यावाक्यं तृतीयस्थे विज्ञानं शिल्पजं सुखे॥ १
कौटिल्यं पञ्चमे षष्ठे मिथ्यावेषकरो मतः ।
स्मरे कुटिलयुद्धाख्यं रोगे गोऽजीर्णादितोऽष्टमे २॥
मिथ्याधर्मपरो धर्मे खभे शिल्पं स्मृतं परम् ।
लाभे तु यदि लाभः स्यात्पूर्वलब्धव्ययो व्यये॥३॥

महीनेमें लग्नमें बुध हो तो कुटिलता । २ में वंचनसे धन । ३ में झूँठा वाक्य । ४ में शिल्पज्ञान । ५ में कुटिलता । ६ में झूँठा ढोंग । ७ में कुटिलयुद्ध । ८ में जीर्ण रोग । ९ में मिथ्याधर्म । १० में शिल्प । ११ में पूर्व लब्धका लाभ । १२ में व्यय हो ॥ १-३ ॥

गुरुभावः ।

गुरौ मूर्तौ भवेन्मन्त्री धनं धनगतं भवेत् ।
विक्रमं विक्रमे तुर्ये सुखं राज्याद्धनागमः ॥ १ ॥
विद्यापुराणपुत्रादि पुत्रे शत्रुकरो रिपौ ।
योषित्सौख्यं तथा द्यूने ज्ञेन्दुशुक्रयुते बहु ॥ २ ॥
मृतौ रोगागमो धर्मे धर्मलाभो वृषागमः ।
कर्मगे राज्यलाभः स्याल्लाभे लाभो व्यये व्ययः ॥ ३ ॥

महीनेमें बृहस्पति लग्नमें हो तो मंत्री । २ में धन । ३ में बल । ४ में सुख, राजधन । ५ में पुत्र, विद्या और पुराण । ६ में शत्रु । ७ में स्त्रीसुख तथा बहुत वीर्य । ८ में रोगका आगमन । ९ में धर्मका लाभ तथा वृषका आगमन । १० में राज्यलाभ । ११ में लाभ । और बारहवें हो तो खर्च होता है ॥ १-३ ॥

शुक्रभावः ।

जगत्प्रीतिः सिते मूर्तौ धनलाभो द्वितीयगे ।
तृतीये पोषणं भ्रातृभगिन्योरपि सम्पदः ॥ १ ॥
सुखे सर्वसुखावाप्तिः सर्वलोकप्रियो भवेत् ।
पञ्चमे बुद्धिसंपत्तिः कुटुम्बकलहो रिपौ ॥ २ ॥
स्त्रीरतिः सप्तमे शुक्रे अष्टमे श्लेष्मसंभवः ।
अकस्माद्धनधान्यादिधर्माप्तिश्चापि धर्मगे ॥ ३ ॥
राज्यं खे लाभगे स्त्रीभ्यो धनाढ्योऽपि व्ययो व्यये४

महीनेमें लग्नमें शुक्र हो तो जगत्प्रीति । २ में धनलाभ । ३ में बहन भाइयोंका पोषण । ४ में सब सुखोंकी प्राप्ति और सबका प्यारा । ५ में बुद्धि-संपत्ति । ६ में कुटुंबकलह । ७ में स्त्रीभोग । ८ में कफसंभव । ९ में अकस्मात् धन धान्य धर्मकी प्राप्ति । १०में राज्य । ११ में स्त्रियोंसे धनाढ्य । १२ में व्यय होता है ॥ १-४ ॥

शनिभावः ।

तनौ देहविपत्सौरे स्वोच्चादिस्थे तनौ सुखम् ।
धननाशो धने सौरे विक्रमे सहजापदः ॥ १ ॥

स्त्रीभोगः सुखगे नष्टः पुत्रे पुत्रादिपीडनम् ।
शत्रुनाशकरः षष्ठे द्यूने निर्वृतिनाशकृत् ॥ २ ॥
वातरोगस्तथा छिद्रे धर्मे धर्मादिलब्धयः ।
राज्यगौरवहानिः स्याद्दशमे सूर्यनन्दने ॥ ३ ॥
लाभे लाभो व्यये नेष्टं ज्ञातव्यं सर्वदा बुधैः ॥ ४ ॥

महीनेमें लग्नमें शनि हो तो विपत्ति और स्वोच्चादिस्थ हो तो शरीरसुख । २ में धननाश । ३ में सहजापद । ४ में स्त्रीभोग-नाश । ५ में पुत्रादिको पीडा । ६ में शत्रुनाश । ७ में निर्वृतिका नाश । ८ में वातरोग । ९ में धर्म आदिका लाभ । १० में राज्यगौरवकी हानि । ११ में लाभ । और १२ में खर्च होता है ॥ १ ॥ २-४ ॥

राहुभावः ।

राहुस्तनौ तनौ पीडा वस्त्रालंकारपीडनम् ।
धने धनविनाशाय विक्रमे बन्धुनाशनः ॥ १ ॥
तोये भोज्यकुटुम्बघ्नः पुत्रे सन्ततिपीडनम् ।
रिपुहा रिपुराशिस्थः पत्नीनाशाय सप्तमे ॥ २ ॥

मृतौ मृत्युविनाशाय शुभलाभाय कीर्तितः ।
धर्मकर्मे पदप्राप्तिर्लाभे लाभो व्यये व्ययः ॥ ३ ॥

महीनेमें राहु लग्नमें हो तो शरीरपीडा, वस्त्रालंकारपीडा। २ में धननाश । ३ में बन्धुनाश। ४ में भोजन तथा कुटुंबनाश। ५ म संततिपीडा। ६ में शत्रुनाश। ७ में स्त्रीनाश । ८ में मृत्युविनाश, शुभलाभ । ९ में धर्म । १० में पदप्राप्ति । ११ में लाभ । १२ में असद्व्यय होय है ॥ १-३ ॥ इति ।

वर्षे मासे वा केतुफलम् ।

यद्यपि इस फलप्रकरणमें केतुका फल कहीं भी नहीं आया है तथापि हमने त्रुटिनिष्कासनार्थ ग्रन्थान्तरसे "केतुभावफल" संयोजित कर दिया है, यह वर्ष और मास दोनोंमें काम देता है।

शिखी लग्नगश्चेच्छिरोरोगपीडां विदेशाद्भयं
व्यग्रतापं करोति । कलत्रादिचिन्ता महोद्वे-
गतां च शरीरे व्यथामागतां नीचतो वा ॥ १ ॥

लग्नमें केतु हो तो शिरमें रोगपीड़ा, विदेशसे भय, व्यग्रताप, स्त्री आदिकी चिंता, बड़ा उद्वेग और चोट या नीचसे शरीरमें व्यथा होय ॥ १ ॥

धने केतुगे धान्यनाशो धनं च कुटुम्बाद्विरोधो
नृपाद्द्रव्यचिन्ता । मुखे रोगरुक् सत्यता नैव
वाण्याः सदा स्वे गृहे नैव सौख्यं प्रयाति ॥ २ ॥

दूसरे केतु हो तो धन धान्यका नाश, कुटुंबसे विरोध, राजासे धनचिंता, मुखरोग, असत्य और घरमें सुख नहीं मिलता है॥ २॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशश्च वादो धनं भोग-
मैश्वर्यतेजोऽधिकश्च । भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहु-
पीडा न धर्मो न दानं सदा विक्रमः स्यात् ॥ ३ ॥

तीसरे केतु हो तो शत्रुओंका नाश, विवाद, धन, भोग, ऐश्वर्य और तेजकी अधिकाई, बन्धुनाश, बाहुपीड़ा और न धर्म हो न दान, परन्तु सदा पराक्रम होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे न मातुः सुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः
पैतृकं नाशमेति । शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वो-
च्चगेहे चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥ ४ ॥

चौथे केतु हो तो माता तथा सुहृद्वर्गका सुख नहीं हो । पिताका नाश हो । यदि उच्चका केतु हो तो बन्धुवर्गसे सुखहो किन्तु घरमें ज्यादा रहना नहीं हो और व्यग्रता हो ॥ ४ ॥

शिखी पञ्चमे दुष्टबुद्धिर्भवेच्च स्वयं स्वोदराद्-
वातापित्ताग्निकष्टम् । स्वबुद्धयान्यथासन्ततिः
स्वल्पपुत्रा सदाशा भवेद्वै विलम्बो नृपाद्वा ॥५॥

पांचवें केतु हो तो दुष्ट बुद्धि हो, अपने उदरमें वात पित्त आदिका कष्ट हो, बुद्धिका ह्रास, संततिकी न्यूनता और श्रेष्ठ आशामें राजपक्षसे विलंब हो ॥ ५ ॥

तमश्छायया षष्ठगः शत्रुनाशो
भवेन्मातुलात्पक्षतो मानभङ्गः ।
चतुष्पात्सुखं सर्वदा तुच्छवीर्यं
वियोगस्तु देहे सदा व्याधिनाशः ॥ ६ ॥

छठे केतु हो तो शत्रुनाश हो, मामासे मानभंग हो, चौपायोंसे सुख हो, सदा वीर्य कम हो और व्याधिका नाश हो॥६॥

शिखी सप्तमे मार्गगोद्वेगता च निवृत्तिश्च
मार्गे व्यये व्यग्रता च । यदा कण्टके सर्वदा
लाभकारी कलत्रादिपीडा तथा देहपीडा ॥७॥

सातवें केतु हो तो मार्गसे उद्वेग, मार्गमें निवृत्ति, व्ययमें

व्यग्रता, केन्द्रमें होनेसे सदा लाभ, स्त्री आदिकी पीडा और देहपीडा हो ॥ ७ ॥

गुदापीडनं वातव्यग्रश्च रोगो
यदा कीटगः कन्यगो युग्मगो वा ।
भवेद्रन्ध्रगश्छायया सैंहिकेयो
ह्यजागोभिजाते सुतार्थादिलाभः ॥ ८ ॥

आठवें केतु कर्क, कन्या वा मिथुनका हो तो गुदामें पीडा तथा वातसे व्यग्रता हो और मेष तथा वृषका हो तो सुत (पुत्र) तथा द्रव्यका निश्चय लाभ हो ॥ ८ ॥

यदा वै शिखी धर्मगो धर्मनाशं सुतार्थं मतिं
म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिम् । सहोत्थव्यथां बाहुरोगं
विधत्ते तपोदानतो हासवृद्धिं करोति ॥ ९ ॥

नौवें केतु हो तो धर्मका नाश, पुत्रके अर्थ मति, म्लेच्छसे भाग्यकी वृद्धि, सहोत्थव्यथा, भुजमें रोग और तप दानसे हास वृद्धि करता है ॥ ९ ॥

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगो

मातृनाशं करोति । हृदि व्याधितः पीडितो जानुरेव यदा वैणिके कन्यके कष्टभोगी ॥ १० ॥

दशवें केतु हो तो पिताका सुख, स्वयं दुर्भागी, माताका नाशक और हृदय, जानुसे पीडित और कष्टभोगी होता है १०

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः सुनेत्रः सुगात्रः सुवस्त्रोपवीतः। हृदः पीडनं संततिर्दुर्भगा स्यात् शिखी लाभगो लाभकारी जनः स्यात् ॥ ११ ॥

ग्यारहवें केतु हो तो सुभाग्य, सुविद्या, दर्शनीय सुनेत्र, सुगात्र, सुवस्त्रों और जनेऊयुक्त और लाभकारी होता है, हृदयमें पीड़ा तथा दुर्भगसंतति होती है ॥ ११ ॥

शिखी रिष्फगः पादनेत्रे च पीडां स्वयं राजतुल्यं सुखर्द्धिं करोति । रिपोर्नाशनं मातुलेनैव हीनं रुजापीडितं वस्तिगुह्ये करोति ॥ १२ ॥

बारहवें केतु हो तो पाद नेत्रमें पीड़ा, स्वयं राजतुल्य, शत्रुनाशक, वस्ति गुह्यमें रोग और अमातुल होता है ॥ १२ ॥

हद्दाचक्रम्।

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
बृ ६	शु ८	बु ६	मं ७	६	७	६	७	बृ १२	बु ७	शु ७	शु १२
शु ६	बु ६	शु ६	शु ६	शु ५	शु १०	बु ८	शु ४	शु ५	बृ ७	बु ६	बृ ४
बु ८	बृ ८	बृ ५	बु ६	७	बृ ४	७	बु ८	बु ४	शु ८	बृ ७	बु ३
मं ५	श ५	मं ७	बृ ७	बु ६	मं ७	शु ७	५	मं ५	४	मं ५	मं ९
५	मं ३	श ६	श ४	मं ६	श २	मं २	श ६	श ४	मं ४	श ५	श २

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	मं	कुं	मी	
मे	मं	तु	क	मे	मं	तु	क	मे	मं	तु	क	३।२०
वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	६।४०
मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	१०।०
क	मे	मं	तु	क	मे	मं	तु	क	मे	मं	तु	१३।२०
सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	१६।४०
क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	२०।०
तु	क	मे	मं	तु	क	मे	मं	तु	क	मे	मं	२३।२०
वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	२६।४०
ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	३०।०

द्रेष्काणचक्रम् ।

मे	वृ	मिं	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अं
मं	वृ	वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	१०
सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ	२०
शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं	३०

पञ्चवर्गीबलम् ।

स्व.	मि.	स.	श.
स्व. ३० ०	२२ ३०	१५ ००	७ ३०
ह. १५ ००	११ १५	७ ३०'	३ ४५
द्रे. १० ००	७ ३०	५ ००	२ ३०
न. ५ ००	३ ४५	२ ३०	० १५

नवमांशाद्यगणम् ।

१	१०	७	४
१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

नीचांशचक्रम् ।

सू ६ १०	चं ७ ३	मं ३ २८	बु ११ १५	वृ ९ ५	शु ५ २७	श ० २०